गांधार ग्राम मे इनका मत था कि यह अब लुप्त हो गया है। ग्राम के प्रत्येक स्वर को आधार मानकर अवरोह आरोह प्राप्त स्वरावली को मत ने मुर्छना कहा तथा ग्रह, अंश, न्यास, अपन्यास, सन्यास, विन्यास अल्पत्व आदि 12 लक्षणों से व्यवस्थित होने पर मुर्च्छना जाति बनती है और उसकाल में मुर्च्छनाएँ ही गाई बजाई जाती थी जिस प्रकार आजकल राग का व्यवहार होता है वही स्थान

मत ने निश्चित श्रुतिमान्तर पर दो स्वरों के बीच स्वर संवाद बताया जिसके अन्तर्गत षड्ज, मध्यम, पंचम, गांधार अर्थात नौ श्रुतियों पर, 13 श्रुतियों पर एवं सात श्रुतियों ~~पर~~ के दूरी पर अवस्थित 2 स्वरों के बीच संवाद होते है। 13 श्रुतियों के बीच षड्ज पंचम भाव

9 श्रुतियों के ~~बीच~~ अन्तर पर षड्ज मध्यम भा

4 स्वरों के अन्तर पर दो स्वरों के बीच षड्ज गान्धार,

सा म, रे प, ग ध, म नी, प सां। के बीच इन स्वर जोड़ियों के बीच 9 श्रुतियों का अन्तर है

सा प, रे ध, ग नी म सां। 13 श्रुतियों का अन्तर है।

सा ग रे म

परन्तु भरत ने षड्ज मध्यम एवं षड्ज पंचम को अधिक व्यवहारिक बताया। भरत ने श्रुतियों की संख्या एवं श्रुतियों मे आपस में दूरी समान है इसे सुनिश्चित करने के लिए सारणा ~~चतुष्टय~~ चतुष्टय प्रयोग किया। जिसमें भरत ने दो समान वीणा के लिए दोनो वीणाओं के निर्माण में जहाँ तक सम्भव हुआ एक रूपता रखक।
जैसे :-

वीणा की लकड़ी, लकड़ी का वजन, उसका अनुपात, मोटाई, तार की बनावट इत्यादि। और दोनों वीणाओं के स्वरों को षड्ज ग्राम के स्वरों में मिलाया तथा एक वीणा पर प्रयोग किया। और दूसरे पर देखा। प्रयोग वाले वीणा को चल वीणा या अध्रुव वीणा कहा। प्रयोग को देखा उसे अचल या ध्रुव वीणा कहा। इस प्रयोग में भरत ने यह सिद्ध किया की श्रुतियाँ 22 है और इनकी दूरीयाँ समान है। स्वर, राग इत्यादि के बाद भरत ने वाद्यों पर अध्ययन किया। तथा बनावट एवं स्वर उत्पत्ति की।
भरत ने चार प्रकार बताये
(i) तन्त्र, (ii) घन, (iii) सुषिर, (iv) अवनद्ध
i) तन्त्र - तत् के अन्तर्गत वैसे वाद्यों को रखा जिनमें तारों पर उत्पन्न किये जाते थे।